2

विश्वास जो कठिन समयों में अलग पहचान बनाता है (1:2-4)

जीवन के परमेश्वर के पाठ्यक्रम में उसका एक कोर्स ''टैस्टिंग 201'' भी है। कक्षा की चीख है ''हाय।'' कक्षा का रंग काला और नीला है। कक्षा का लक्ष्य ''यह भी बीत जाएगा'' है।

क्या टैस्टिंग या परख हम सब के लिए सामान्य अनुभव नहीं लगती ? व्यावहारिक मसीहियत की इस पुस्तिका में पहला विषय, जो याकूब ने लिया है, वह जीवन में आने वाली कठिनाइयां है। आधुनिक विचार कि मसीही बनना जीवन को आसान बना देगा और सब समस्याओं से मुक्ति दिलाएगा उसके लिए बाहरी है।

हैरल्ड कुशनेर नामक एक यहूदी रब्बी द्वारा एक बहुत भावुक पुस्तक लिखी गई थी। कुशनेर अपने पुत्र हारून के बारे में बताता है, जो ''तेज़ी से बूढ़े होने'' की बीमारी से पीड़ित था। ग्यारह साल तक कुशनेर और उसकी पत्नी बीमारी से पीड़ित अपने पुत्र को देखते रहे। अपने चौदहवें जन्मदिन के चार दिन बाद हारून कुशनेर एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में मर गया। कुशनेर को समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ यह ''क्यों'' हुआ और उसने *वैन बैड थिंग हैपनड टू गुड पीपल* नामक पुस्तक लिखी।

धर्म शास्त्रीय अर्थ में कहें तो मैं कुशनेर के निष्कर्षों से सहमत नहीं हो सकता, परन्तु यदि व्यावहारिक तौर पर कहें तो मैं इस प्रश्न के पीछे की प्रेरणा को समझ सकता हूं। बहुतों ने ऐसे ही विचारों को समझने की कोशिश की है। मुझे मालूम है कि मैंने भी की है! 1986 के अगस्त माह के सात दिनों के दौरान मैंने आठ लोगों का जनाज़ा करवाया या उनमें शामिल हुआ। एक प्रिय ऐल्डर को कैंसर के कारण खोने के अलावा, हमारी पांच स्त्रियां एक भयंकर कार हादसे में मर गईं। (तीन तो उसी समय मर गईं, जबकि दो अन्य आई.सी.यू. में मरीं।) ऐसे समय ही व्यक्ति को रात को जगाकर सवाल करते हैं कि ऐसा ''क्यों ?''

याकूब अपनी पत्री का आरम्भ उसके साथ करता है, जिसे ''वास्तविक चिकित्सा'' कहा जा सकता है। पहले वह विश्वासियों को यह *बताना* चाहता है कि वे जीवन की अटल समस्याओं की उपेक्षा कर सकते हैं। दूसरा वह हमें बताना चाहता है कि परमेश्वर में हमारा विश्वास उन कठिन समयों में अलग पहचान बना सकता है।

परीक्षाओं की वास्तविकता

आयतें 2 और 3 कहती हैं ''हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।'' इन आयतों में याकूब परीक्षाओं की पांच महत्वपूर्ण सच्चाइयां बताता है।

परीक्षाओं का आना आवश्यक है

याकूब यह नहीं कहता कि ''*यदि* तुम परीक्षाओं में पड़ो, ...'' बल्कि वह कहता है कि ''जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, ...'' (1:2)। जो विश्वासी यह अपेक्षा करता है कि उसका मसीही जीवन आसान होगा, उसे झटका लगेगा। जीवन हमारे लिए कुछ न कुछ संकट लाता ही है, कई बार कोई कठोर निर्णय लेना होता है, कोई घाव सहना होता है या किसी बीमारी या दुर्घटना से निकलना होता है। किसी में यह भावना आ सकती है कि जीवन परेशानियों से भरा है।

परीक्षाएं बहुरंगी हैं

जब याकूब यह कहता है कि ''नाना प्रकार की परीक्षाएं'' तो वह एक ऐसे शब्द का इस्तेमाल करता है, जिसका और बेहतर ढंग से ''बहुरंगी'' अनुवाद किया जा सकता है। यह आधारणा कि याकूब घोषणा करता है वह यह है कि परीक्षाएं कई प्रकार से और कई रूपों में आ सकती हैं। जीवन में आने वाली हर ज़िम्मेदारी के साथ अपनी तरह की अलग परीक्षा होती है। उदाहरण के लिए माता-पिता बनना एक शानदार और रोमांचकारी पहलू है; तौभी जैसा कि हर माता-पिता को मालूम है कि अपने साथ यह कठिनाइयां और परीक्षाएं दिलाता है।

परीक्षाओं की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती

आयत 2 में ''पड़ो'' क्रिया उसी शब्द से है, जिसका इस्तेमाल यीशु ने धन्य सामरी के दृष्टांत में किया जब उसने कहा, ''एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं के हाथ आ गया था'' (लूका 10:30; NIV)। यह तो ऐसा है कि जैसे याकूब कह रहा हो कि किसी भी दिन, दिन के किसी भी समय, कोई परीक्षा प्रतीक्षा कर रही है, और हमें लपकने को तैयार है। हमारे सब के और हर किसी के जीवन में कोई न कोई विनाशकारी परीक्षा किसी कोने में हो सकती है।

परीक्षाएं विश्वास को परखती हैं

कहने की आवश्यकता नहीं कि परमेश्वर हमारे जीवन में कठिन, घृणित और विनाशकारी घटनाओं को लाता है। कहने का अर्थ यह है कि परमेश्वर में हमारा विश्वास, हमारा भरोसा और हमारा साहस ''परीक्षा'' में पड़ जाता है जब चीज़ें गलत होती हैं। जब सब कुछ सही चल रहा हो तो परमेश्वर में विश्वास करना और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना आसान होता है। परन्तु जब आपका काम छूट जाए, आपके जीवन की बचत आपसे छिन जाए, आप किसी खतरनाक बीमारी का इलाज करा रहे हों, आपकी पत्नी या आपका पति आपको छोड़ दे या आपके बच्चे नशों में पड़ जाएं तो आपके विश्वास का क्या होगा? तब आप क्या कहते हैं? जीवन की परीक्षाएं विश्वास को आग में डालती हैं और निरोल विश्वास हमेशा तेज़ और धधकती आग में से ही बाहर निकलकर आता है।

परीक्षाएं मज़बूती देती हैं

विश्वास की ''परीक्षा'' द्वारा दिया जाने वाले उत्तर का प्रश्न है कि ''क्या यह मज़बूत होगा?'' मज़बूती किसी पुस्तक को पढ़ने, कोई प्रवचन सुनने या प्रार्थना करने से नहीं आ सकती। जब परीक्षाएं आती हैं तो हम मानने लगते हैं कि हमारे लिए उन अच्छी बातों में जो हमें लगता है कि हमें करनी चाहिए, बने रहना कठिन हो गया है। क्योंकि लगता है कि हमें उस भलाई का जो हम करते हैं प्रतिफल नहीं मिल रहा है। याकूब कहता है कि धीरज और चरित्र हमारे जीवनों में केवल परीक्षाओं से ही बढ़ सकता है। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए और उसकी आज्ञा मानकर जीवन की कठिनाइयों में से निकलना आवश्यक है!

हमारी परीक्षाओं का जवाब

सदियों से मसीही लोगों को याकूब 1:2 से दिक्कत रही है। हमें इस विचार के साथ दिक्कत रही है कि परमेश्वर हमें जीवन की समस्याओं से ''आनन्द'' लेना चाहता है। यदि यह विचार सही है तो क्या हमें बाहर जाकर यह देखने की आवश्यकता है कि हम अपने आप में कितनी बुराइयां कर सकते हैं? यानी जो स्पष्ट है कि परमेश्वर के स्वभाव के साथ बने रहना नहीं है।

वचनपाठ से दो बातों पर विचार किया जाना आवश्यक है। पहला यह कि याकूब यह नहीं कहता कि जीवन की परीक्षाएं आनन्द हैं। अपने परिवार के साथ होने, अन्य पवित्र लोगों के साथ संगति करने, किसी को परमेश्वर की संतान बनना देखना ''सच्चा आनन्द'' है। जीवन की परीक्षाएं आनन्ददायक नहीं हैं, परन्तु उन्हें ऐसा ''मानना'' (''गिनना,'' KJV) है। दूसरा, विद्वानों का कहना है कि ''मानना'' शब्द अनिश्चित भूतकाल में है जिसका अर्थ यह है कि ''आनन्द'' परीक्षा के बाद आता है। आपने एक पुरानी कहावत सुनी होगी, ''जीवन से जब तुम्हें नींबू मिले तो तुम उसकी शिकंजवी बना लो।'' हास्यास्पद परन्तु व्यवहार में लाना कठिन यह वाक्य एक तरह से याकूब के विचारों की व्याख्या है। पूरी बाइबल में एक के बाद एक उदाहरण उन लोगों का मिलता है, जिन्होंने पराजय को विजय में और परीक्षा को जीत में बदल डाला।

हम तीन प्रकार से अपनी परीक्षाओं को हर प्रकार का आनन्द मान सकते हैं:

इस विश्वास का कारण कि हमें मालूम है कि हम अकेले नहीं हैं, हम आनन्द कर सकते हैं। हमारा एक प्रेमी और सामर्थी प्रभु है, जो पूरे रास्ते में हमारे साथ होता है। भजनकार ने इसे खूब कहा है: ''चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; ...'' (भजन संहिता 23:4)। न केवल हमारा प्रभु हमारे साथ में है, बल्कि उसमें हमारा आत्मिक परिवार भी बुरे समयों में हमारी सहायता करेगा। मुझे याद है कि हम कलीसिया के एक ऐल्डर के घर में बैठे, उसकी पत्नी के मरने पर उसे तसल्ली देने की कोशिश कर रहे थे, जब उसने कहा, ''मुझे नहीं मालूम कि जो लोग मसीही नहीं हैं उनका क्या होता होगा।'' जब मैं इतने लोगों का जनाज़ा कर रहा था, उन लोगों का जनाज़ा जो मुझे प्रिय थे, तो मुझे दूसरे प्रचारकों के एक के बाद एक फोन मिले जिसमें वे मुझे बता रहे थे कि वे मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

परीक्षाएं परख बढ़ने का समय हो सकती हैं और होनी भी चाहिए। रॉबर्ट ब्राउनिंग हैमिल्टन ने एक बार लिखा था:

मैं संतुष्टि के साथ एक मील तक चला।
वह पूरे रास्ते बातें करती रही;
परन्तु उसने मेरी मति मार दी

मैं शोक के साथ एक मील चला
और उसने एक शब्द तक नहीं कहा;
परन्तु, ओह, मैंने सीखा
जब शोक मेरे साथ चला।

इस लघु कविता की सच्चाई को बार-बार अनुभव किया जाता है। पुराने नियम, विशेषकर दाऊद के जीवन का अध्ययन करने वाला व्यक्ति इस बात से कायल हो जाता है कि उन भजनों से जो उसने लिखे दाऊद के प्रभु के साथ सम्बन्ध का पता चलता है, जो निराशा के समयों में बढ़ा।

याकूब हमारे मन की उस पुकार का उत्तर देता है कि हमारा विश्वास और अधिक मेल खाता है और हमारी वफ़ादारी कम अव्यवस्थित हो सकती है। जीवन की परीक्षाएं परमेश्वर द्वारा की जाने वाली परख हैं, और विश्वास की मज़बूती और उसका अभ्यास जीवन की परीक्षाओं से ही मिलता है।

जीवन की परीक्षाएं मसीह जैसा बनने का अवसर देती हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है:

> और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस *आनन्द* के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस पर दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने बैठा (इब्रानियों 12:2)।

जीवन में परीक्षाओं और कठिनायों का होना इस बात का संकेत नहीं है कि परमेश्वर हमसे प्रेम नहीं करता। इसका अर्थ यह है कि हम पाप से श्रापित संसार में रह रहे हैं। हमें और यीशु के जैसे बनने और अपने विश्वास को उन परीक्षाओं में स्थिर रखने का निश्चय करना आवश्यक है। याकूब कहता है, ''पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे'' (1:4)।

सारांश

विश्वास के लोगों के लिए परीक्षाओं का होना हानिकर अनुभव नहीं है। मसीही लोग जीवन की कठिनाइयों में से निकल सकते हैं। जीवन की परीक्षाएं विश्वास को अलग पहचान बनाने के अवसर देती हैं। जितना अधिक विश्वास काम करता है उतना ही मसीही व्यक्ति मजबूत होता है।

अपनी पुस्तक *बिलीविंग गॉड वैन यू आर टेम्पटेड टू डाउट* में जिन गेट्ज़ याकूब 1:2-4 को व्यक्तिगत रूप देता है:

> मैं इस समस्या को मसीह में और मजबूत होने और सम्पूर्ण होने के अवसर के रूप में देखूंगा। मैं इसे जो कुछ मैं चाहता हूं उसे करने के बजाय जो कुछ परमेश्वर कहता है वह करने में स्थिर होने की अपनी योग्यता बढ़ाने के अवसर में देखूंगा। मैं इस समस्या

को अपने ऊपर हावी या मुझे पराजित करने या मेरे मसीही जीवन में बढ़ने से रोकने नहीं दूंगा। मैं इस समस्या को अपने तथा दूसरों के लिए एक अवसर के रूप में प्रमाणित करना चाहूंगा कि मैं सचमुच यीशु का शिष्य हूं। मैं उस दिन की राह देखूंगा जब मैं मसीह का साथ हूंगा; आनन्द से उस अनुभव में प्रवेश करते हुए। सबसे बढ़कर मैं परमेश्वर की आज्ञा मानूंगा क्योंकि मैं उससे अपने आपसे अधिक प्रेम करता हूं।[1]

टिप्पणी

[1]जिन गेट्ज, *बिलीविंग गॉड वैन यू आर टैम्पटड टू डाउट* (पृष्ठ नहीं: रीगल बुक्स, 1983), 27-28.